A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

भारतीय शास्त्रीय संगीत के साधक: पं० निखिल बैनर्जी एवं उनकी वादन शैली

Dr. Mamta Yadav
Assistant Professor, Gurukul Kangri University, Haridwar

OPEN ACCESS

सार

पंडित निखिल बैनर्जी भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सितारवादकों में गिने जाते हैं। उनका जन्म 14 अक्टूबर 1931 को कोलकाता में हुआ। बचपन से ही संगीत के प्रति गहरी रुचि ने उन्हें उस्ताद अलाःुद्दीन खाँ के सुपुत्र उस्ताद अली अकबर खाँ के सान्निध्य में ला खड़ा किया। निखिल बैनर्जी की वादन शैली में गहनता, आध्यात्मिकता और नाद की अनोखी मिठास देखने को मिलती है। वे केवल तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं थे, बल्कि हर राग को साधना और ध्यान की तरह प्रस्तुत करते थे। उनकी आलाप की शैली अत्यंत विलंबित और भावपूर्ण होती थी, जिससे श्रोताओं को राग का सम्पूर्ण रसास्वादन होता था। तान और जटिल लयकारी में भी उनका संतुलन अद्वितीय था। उनके वादन में लय और भाव का ऐसा संगम मिलता है कि संगीत सीधे श्रोता के हृदय को स्पर्श करता है। निखिल बैनर्जी ने सतत साधना और गंभीर प्रस्तुति द्वारा सिद्ध किया कि सितार केवल वाद्य नहीं, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति का माध्यम है। वे बड़े मंचीय कलाकारों की भीड़ से भिन्न, अंतर्मुखी और गंभीर संगीतकार थे। इसी कारण उन्हें "साधक" कहा जाता है। पंडित निखिल बैनर्जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर पर सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी वादन शैली आज भी नई पीढ़ी के कलाकारों और श्रोताओं को प्रेरित करती है।

कुंजी शब्द : *सितारवादक, आलाप शैली, आध्यात्मिकता, राग साधना, लय और भाव, भारतीय शास्त्रीय संगीत*

भूमिका

पं० निखिल बैनर्जी का जन्म 14 अक्टूबर 1931 को हुआ। आपने उस्ताद अलाउद्दीन खाँ से सितार की शिक्षा प्राप्त की। कम उम्र में ही उनके पिता सितार वादक श्री जितेन्द्रनाथ बैनर्जी ने उनको सितार की शिक्षा देनी शुरू की। बाल्यकाल से ही निखिल जी गम्भीर प्रकृति के थे। कम उम्र में ही आपने 'ऑल बंगाल सितार रिसाइटल' में अपना सितार वादन पेशकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध सरोद वादक राधिका मोहन मोइत्रा से प्राप्त हुई। निखिल जी के निवास स्थान के पास ही विलायत खाँ का निवास स्थान था। उनके निरन्तर रियाज का प्रभाव निखिल जी पर पड़ा। इसके अतिरिक्त मुश्ताक अली खाँ से भी उन्होंने कुछ समय तक शिक्षा ग्रहण की।

`चौदह वर्ष की अल्प आयु में निखिल जी बाबा अलाउद्दीन खाँ के पास आ गये। यहाँ उन्हें कठोर बन्धन, निरन्तर रियाज और राग ध्यान का पालन करना पड़ा। मैहर में वे सात वर्ष संगीत साधना में लीन रहे। पूर्णतया सांगीतिक वातावरण ने उनकी प्रतिभा को और मुखरित कर दिया। श्रीमती अन्नपूर्णा देवी से उनको संगीत माता के समान वात्सल्य मिला।

मैहर से शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात् निखिल जी ने 'तानसेन संगीत-सम्मेलन में भाग लिया, परन्तु इस बीच आपकी संगीत शिक्षा जारी रही। इसके उपरान्त आपने लखनऊ में भातखण्डे कॉलेज के सरोद शिक्षक सुप्रभात पाल से भी संगीत शिक्षा ली। 1955 से उन्होंने विदेशों में कार्यक्रम देने प्रारम्भ किये। अमेरिका, इंग्लैण्ड पश्चिम यूरोपीय देशों में उन्होंने बराबर कार्यक्रम दिये। रूस, फ्रांस, चीन,आस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, नेपाल की उन्होंने यात्रा की। अमेरिकन सोसायटी फार ईस्टर्न आर्ट्स में शिक्षक होकर वे अमेरिका भी गये। इसके अतिरिक्त अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक कैलीफोर्निया में भी उन्होंने शिक्षक का पद सम्भाला।

उनके कुछ रिकार्डस भी तैयार हुए हैं जैसे मलूहा-केदार, हेमललिता, वाडल, मिश्रगारा, जौनपुरी, ललित सिंधु, भैरवी, माँड, पूरिया कल्याण, मेघ भटियार, सोहनी, हेमंत, सिन्धूरा, मालकोश, अड़ाना आदि। तड़क-भड़क से दूर भारतीय संगीत परम्पराओं में लीन वे सिद्ध पुरुष थे। उनका कहना था कि साधना के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं हो सकता। राग को मूर्तमान कर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करना उनकी विशेषता थी। ऐसा एक बहुमुखी प्रतिभावान कलाकार गत 27 जनवरी 1986 को चिरनिद्रा में सो गया। वे मृत्यु के समय केवल पचपन वर्ष के थे।

उन्हें तीन बार दिल का दौरा पड़ा और पक्षाघात से शरीर पर प्रभाव को भी सहकर वे एक बार फिर अपनी कला की चरम सीमाओं की पूर्ववत् ऊँचाइयों पर पहुँचे थे। डोबरलेन संगीत समारोह कलकत्ता में 24 जनवरी 1986 को उन्होंने अपना अन्तिम कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें चौथी बार दिल का दौरा पड़ने से वे अत्यधिक अस्वस्थ हो गये और तीन दिन के अन्दर ही संगीत संसार में अंधेरा कर चल बसे।

वास्तव में संगीत जगत में यह एक ऐसी क्षति है, जिसे पूर्ण नहीं किया जा सकता। इस उम्र में जबकि उनका वादन और परिणाते को प्राप्त करता, गम्भीरता आती, इसी उम्र में वे मृत्युलोक को सिधार गये। सितार जगत में उनके रूप में एक महान व्यक्तित्व खो दिया। संगीत जगत को जो योगदान उन्होंने दिया, उसकी तुलना नहीं है। वे सितार वादन में नव वैचित्र्य ले आये, नया दृष्टिकोण लाये। उन्होंने एक नया 'स्टाइल' दिया, जो अनुकरण योग्य है।

सन् 1986 में निखिल बैनर्जी को पद्मश्री से विभूषित किया गया था तथा 1974 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। उनकी महानता को देखते हुए वे निश्चित रूप से इससे अधिक सम्मान के अधिकारी थे। अत्यन्त सरल स्वभाव तथा कला के प्रति पूर्ण निष्ठा होने के कारण उन्होंने कभी इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। इस विलक्षण प्रतिभा को हमने बहुत जल्दी खोया। कुछ ग्रामोफोन एवं आकाशवाणी रिकार्डस ही भविष्य में उनके महान संगीत की यादगार के रूप में अवशेष रह गये हैं।

पं० निखिल बैनर्जी की वादन शैली

सितार वादन के मैहर घराने के एक कुशल सितार वादक पं० निखिल बैनर्जी ने उस्ताद अलाउद्दीन खाँ व उनके पुत्र उस्ताद अली अकबर खाँ दोनों से ही सितार वादन की शिक्षा ग्रहण की। इनकी वादन शैली में इनके घराने की अनेक विशेषताओं के साथ-साथ इनकी कुछ निजी विशेषताएँ भी प्राप्त होती हैं। आपके वादन में गहन आध्यात्मिकता, मननशीलता और सेनिया घराने के गुण थे, जैसे-सुडौलता, निपुणता, तन्त्रकारिता में विलम्बित ख्याल का मन्द्रप्रवेश तथा तान तोड़ो में अमीर खां का वैशिष्ट्य-मेरुदण्ड का प्रसार था।

इनके वादन में गंभीर आलाप, राग का सुनियोजित विस्तार लरज व खरज के तारों के वादन एवं सितार की दीर्घ आवाज आदि प्रमुख तत्व हैं। पं० निखिल बैनर्जी के वादन में बीन अंग के प्रयोग के साथ-साथ गायकी अंग का भी प्रयोग होता है एवं आलाप, जोड़-झाले का काम ये विशेष रूप से दिखाते हैं। सितार वादन में ये गत आरम्भ करके ख्याल अंग की तरह ही बीच में आलाप लेने की विधि का पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त जटिल लयकारियों व पलटों का प्रयोग एवं मिजराब के बोलों को काटना इनकी वादन शैली की एक विशेषता है। इनकी वादन शैली की एक अन्य विशेषता इनके बाज का सुरीलापन है। जिसे वे लय के जटिल से जटिल तथा अति द्रुत लय में भी कायम रखने की निपुणता रखते हैं। स्वयं की नई-नई रचनाओं की उपज, लयकारी और ताल में मिलाने की रीति इनकी मौलिक विशेषता है। विलम्बित स्वरों का आलाप, जोड़, तान, तोड़े एवं तैयारी आदि में ये अद्वितीय हैं।

पं० निखिल बैनर्जी जी की तान में सुर है, तान में ही राग की रंजकता है, एक विन्यास के एक तान को दो बार नहीं बजाना चाहिए। स्वर सौन्दर्य का प्रदर्शन और टोन का वैशिष्ट्य उनका अपना था। आपके सुर एवं छन्द के मेल से ऐसा चलन बनता था, जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। बोल अंग का काम, गमक, लड़लपेट, लडगुथाव एवं तानकारी इत्यादि सभी कुछ एक विशेष सुरकल्पना का अंग था। तान की क्षमता दिखाने के लिए वे तानबाजी नहीं करते थे। तानकाम में तो उनका असाधारण कलाबोध था ही द्रुततान का प्रदर्शन भी प्रयोजनीयता के लिए ही करते थे। आपके पदविस्तार या स्वरविस्तार की प्रकृति में द्विमुखी भाव था। सम्भवतः इसी कारण पं० निखिल बैनर्जी अपनी सितार में चार या पाँच नम्बर का तार प्रयोग में लाते थे तथा खुली जवारी के स्थान पर बंदजवारी रखते थे, जिससे स्वर गंभीरता बढ़ती थी।

आपके वादन में सृजनशीलता तथा नवीनता का पुट था। यद्यपि प० रविशंकर आपके गुरु भाई थे, परन्तु निखिल जी की सितार वादन शैली उनसे भिन्न थी। इन्होंने अपनी एक विशिष्ट आश्चर्यजनक वादन शैली निर्मित की थी जिससे उनके दार्शनिक स्वभाव का प्रत्यक्ष आभास होता था। आलाप, बोल-बॉट, लयकारी, उपज सभी में निखिल जी ने एक नया दृष्टिकोण अपनाया। पं० निखिल बैनर्जी ही सम्भवतः सितार पर मेरुदण्ड-तान के प्रवर्तक और वाहक थे। आपकी तानक्रिया में वैचित्र्य और वैशिष्ट्य था। आपके वादन में रविशंकर और विलायत खाँ की शैलियों का मिश्रण माना जाता है। साथ ही यह भी सत्य है कि निखिल दा स्वयं एक विशिष्ट शैली के स्तम्भ थे। सुन्दर राग, सुविन्यस्तध्यान, गम्भीर तन्त्रकारी एवं तालवैचित्र्य का प्रदर्शन उन्हें उच्चतर आसन पर ले जाता था।

निखिल बैनर्जी ने अपनी वादन शैली तैयार की। उसका वैशिष्ट्य था-रागालाप जिसमें राग का रूप व्यक्तिगत किन्तु मर्मस्पर्शी दृष्टि से परिवेशित होता था उनकी मेरुदण्ड प्रणाली के प्रयोग से राग के पदों को नित्य नया रूप मिलता था एवं आरोही-अवरोही, स्वर समष्टि के सुन्दर समन्वय से एक से अन्य अंश का घनिष्ठ संयोग था। जोड़ का काम मध्यलय से एक में करते थे। आलाप में जो पद विस्तार और स्वर प्रगति थी, उससे जो मूर्ति बनती, उसी श्रेणी में जोड़ का काम चलता।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

उन्हें मध्यम वादी वाले राग बजाने बहुत प्रिय थे। मालकौंश, जौनपुरी, कौशी कान्हड़ा, हेमन्त जैसे राग उनके सितार पर मूर्त हो उठते थे। उनके द्वारा बजाए हुए रागों के रिकार्ड हैं-मलुहा-केदार, हेमललित, बाउल, मिश्रगारा, जौनपुरी, ललित, सिंघ भैरवी, मांड, पूरिया, कल्याण, मेघ, भटियार सोहनी, सिंधूरा, अड़ाना इत्यादि।

आपके वादन की प्रशंसा में पं० रविशंकर ने लिखा है कि 'निखिल के वादन में मीड़ अंग की तान अन्यतम था तथा वादन का एक अलग ही रूप था जिसमें समग्र माधुर्य था और सौन्दर्यतत्व लुप्त नहीं होता था।"" वे सरल प्रकृति के थे, उनके व्यक्तित्व में सम्पूर्ण कलाकार के दर्शन होते हैं। उनके अनुसार संगीत और दर्शन एक-दूसरे के पूरक थे। उन्हें बंगला गान बहुत प्रिय था।

"जब निखिल बैनर्जी बाबा से सीख कर आये तो उनके मन में ऐसा विचार आया कि वो स्वयं को रविशंकर व अली अकबर खों एवं विलायत वी से कैसे अलग कर सकें। इन्हीं कारणों से प्रारम्भ से ही वे ध्यान देने लगे इन्होंने शुरू से ही स्वर प्रस्तार, सरगम, पलटों का अथक अभ्यास किया। आपकी बहन उस्ताद अमीर खाँ की शागिर्द / शिष्या थी अतः इन्हीं कारणों से आपका उस्ताद अमीर खाँ से मिलना सम्भव हो पाता था। आप उनके रियाज की शैली तथा विषय सामग्री से प्रभावित थे तथा आप उनका अनुसरण भी करते थे तथा रवीन्द्रनाथ जी आपके आदर्श में थे। आपके वादन में आध्यात्मिकता का आभास होता था। जब आप रागों को बजाते थे तो उसके पहले आप रागों का आवाहन करते. ये क्रिया ठीक वैसी ही है, जैसे हम ईश्वर पूजन के समय करते हैं।" ज्ञानप्रकाश घोष के अनुसार-निखिल बैनर्जी अमीर खाँ के बहुत बड़े भक्त थे और उन्होंने उनसे स्वर प्रस्तार एवं ताल, सुरछन्द, विन्यास एवं अलंकरण का पं० निखिल बैनर्जी के वादन में परिलक्षित होता था।

पं० निखिल बैनर्जी द्वारा सितार में संशोधन

आपने अपनी सितार में एक तार की वृद्धि कर दी थी. इसलिये इनकी सितार में आठ तार होते थे जिनको निम्नानुसार मिलाते रहे-

8	7	6	5	4	3	2	1
सां	सा	प़	ग़	सा़	प़	सा़	म़

वास्तव में देखा जाय तो स्व० पंडित निखिल बैनर्जी जी ने उस्ताद विलायत खाँ और स्व० पं० रविशंकर के तार मिलाने की पद्धति को मिलाकर अपनी एक नई पद्धति प्रस्तुत की है।

पं० निखिल बैनर्जी द्वारा बजाई राग मालकौंस 'मध्यलय' ताल तीन ताल

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								-	सं	-	नी	संगं	संनी	धम	गम
								-	दा	-	रा	दिर	दिर	दिर	दिर
ध	-	नी	ध	ग	म	ग	सा	-	ध	-	नी	सा	ग	म	ध
दा	-	दा	रा	दा	रा	दा	रा	-	दा	-	रा	दा	रा	दा	रा
नी	संनि	धम	धनी	सं-	धनी	सं-	धनी								
दा	दिर	दिर	दिर	दा	रदा	-र	दिर								
x				2				0				3			

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								-	ग	-	म	ध	ध	नी	नी
								-	दा	-	रा	दा	रा	दा	रा
सं	-	सं	सं	गं	नी	सं	-	ध	नीनी	संसं	गंगं	मं-	मंगं	-गं	सं
दा	-	दा	रा	दा	रा	दा	-	दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा
नी	सनी	धम	धनी	सं-	धनी	-सं	धनी								
दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दिर								
x				2				0				3			

सन्दर्भ ग्रन्थ

गर्ग, डॉ० लक्ष्मीनारायण, हमारे संगीत रत्न, संगीत कार्यालय, हाथ्रस, संस्करण वर्ष 1978

जैन, डॉ० प्रभा, भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, मध्य प्रदेश् हिन्दी अकादमी ग्रन्थ, संस्करण वर्ष फरवरी 2001

भटनागर, रजनी, सितार वादन की शैलियाँ, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण 2000, संदर्भ वर्ष 2014

Khan, Ali Akbar, The Classical Music of North India, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., First Publication 1998, Reference Publishing Year 2007.